International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 102-104

भारतीय नागरिकों की राजनैतिक सामाजिक जागरूकता

मिथलेश केन
एम0एम0जे कॉलिज भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने भारत को संघीय ढ़ाचे के अर्न्तगत लोकतन्त्रीय शासन व्यवस्था प्रदान की । पूर्व कालिक सामन्तीय, राजतन्त्रीय और विदेशी दासता से अम्युदय हुआ। जन–2 को स्वतन्त्रता का अहसास कराने की दृष्टि से यह उद्देश्य एक निश्चित रूप से सराहनीय है। एक सम्प्रभु राष्ट्र के स्वतन्त्र नागरिकों के रूप में जीने का अधिकार राष्ट्र के सभी नागरिकों को समान रूप से मिला। और इस क्रम में भाषा क्षेत्र धर्म तथा कोई लिंग भेद नहीं रखा गया। जिस अहिंसक आन्दोलन के कारण राष्ट्र को स्वतन्त्रता मिली थी उसी तरीके से सत्ता परिवर्तन का अधिकार भी जनता को मतदान के रूप में समानता से दिया गया, के बारे में अध्ययन प्रस्तुत है।

मूल शब्द: स्वतंत्रता, संविधान, अर्न्तगत, राजतन्त्रीय

प्रस्तावना
भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक राष्ट्र बन गया तो जनता के कर्तव्य भी बढ़ गये। संविधान में जिन भेदों को समाप्त कर दिया गया था वे लोकतन्त्र में बाधक न हो यही हमारा दायित्व है। इस दायित्व का सही ढंग से तभी निर्वाह हो सकता है। जब नागरिकों में राजनैतिक सामाजिक जागरूकता पूरी तरह विकसित हो।[1] वर्तमान सन्दर्भों में समाज के निर्मल वर्गो को उठाकर समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के प्रयास युद्व स्तर पर किये जा रहे है।

किसी भी लोकतान्त्रिक देश में राजनैतिक सामाजिक जागरूकता का अर्थ है, वहां के नागरिकों में संविधान के प्रति आस्था तथा संविधान में प्रतिस्थापित मूल्यों की रक्षा का बोध होना है। स्वतन्त्रता के 70 वर्ष वीत जाने के पश्चात यह परखना आवश्यक है कि हमारा भारतीय समाज उन मूल्यों के प्रति कहां तक जागरूक है। जहां तक संघीय व्यवस्था का प्रश्न है हम निश्चित रूप से एक जुट होने की कोशिश कर रहे है। किन्तु जहां तक राजनीतिक या विधिक मूल्यों का प्रश्न है वहां अनवरत कमी होती गई है। क्योकि भाषा क्षेत्र, जाति तथा धर्म राजतीति पर हावी होते गये। इससे प्रतीत होता है कि हमारी राजनैतिक सोच कहीं न कही विखरी अवश्य है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि समाज की राजनैतिक सामाजिक जागरूकता के सन्दर्भ में गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

समस्त जातियों में राजनैतिक सामाजिक जागरूकता राजनैतिक चेतना राजनैतिक सहभागिता मतदान व्यवहार राजनैतिक समाजीकरण तथा राजनीतीकरण जैसी अवधारणात्मक समस्याओं के पहलुओ पर विभिन्न दृष्टि कोणों से अनुसंधान कार्य किये जाने चाहिए। वर्तमान परिपेक्ष्य में राजनीतीकरण की प्रकिया को आगे बढ़ाने में ग्रामीण तथा नगरीय पृष्ठ भूमि का प्रमुख योगदान है जिसमें महाविघालय के विद्यार्थियों जो कि युवा वर्ग की श्रेणी में गिने जाते है। आज हमारे देश के विद्यार्थी अपने अध्ययन काल से ही राजनीति में गहन रूचि लेते हुए देश के प्रबुद्व नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित करने का प्रयत्न करते रहते है। आज का विद्यार्थि अपने अध्ययन के साथ–साथ जागरूक बनकर क्षेत्रीय राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय राजनीत में पूरी तरह रूचि लेता है तथा महत्वपूर्ण घटनों के प्रति सर्तक रहता है और आन्दोलनों में भाग लेकर शक्ति के लिए संघर्ष करता है।[2] वर्तमान परिस्तिथियों में राजनीतिक रूप से जागरूक होकर सामाजिक राजनीतिक किया कलापों व गतिविधियों में सक्रिय होकर सहभागिता करते रहेगे। तो वे समाज तथा राजतीतिक सन्दर्भ में व्याप्त विभिन्न समस्याओं,जातिवाद, भाई भतीजाबाद इत्यादि समस्याओं को सुलझाने हेतु व्यवहारिक सुझावो के साथ–साथ राजनेताओं तथा राजनीति के प्रति समाज में विद्यमान मानसिकता राजनैतिक विसंगतिओं तथा राजनैतिक दृष्टि कोणों को परिवर्ततित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने में सक्रिय योगदान निभा सकते है।

राजनीतिक घटनायों राजनीतिक उथल–पुथल तथा राजनीतिक अस्थिरता व्यक्ति की महत्वाकाक्षाओं व आकॉक्षाओं में वृद्वि राजनीति में भी जातिगत राजनीति का बढ़ता हुआ वर्चस्व तथा बोलबाला इत्यादि अनेक ऐसे उत्तरादायी कारक है। जो आधुनिक परिपेक्ष्य में व्यक्ति तथा समाज में राजनीतिक सामाजिक जागरूकता जनित तथा राजनीति की ओर अभिमुखीकरण कर रहे है। जिसमें वर्तमान राजनीति सम्प्रेक्षण तथा राजनीति परिदृश्य विशेष रूप से उत्तरादायी है। अब राष्ट्रीय स्वतन्त्रता स्वाबलम्बन राष्ट्रीय सुरक्षा तथा राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से सभी राष्ट्रों में राजनीतिकरण की प्रक्रिया का नवीन संगठित मानव समूह से घनिष्ठ सम्बन्ध है आज प्रत्येक व्यक्ति समूह प्रत्येक दल प्रत्येक वर्ग की आकांक्षा है कि वह राजनीति के माध्यम से अपने अधिकारों को अधिकारिक रूप से प्राप्त करें अपने पिछड़ेपन को दूर करें तथा विकास की प्रक्रिया को बल प्रदान करें। जिस प्रकार प्रत्येक कार्य के लिए कोई न कोई कारण अवश्य होता है ठीक इसी प्रकार प्रत्येक सामाजिक घटना तथा सामाजिक किया हेतु कुछ न कुछ कारक उत्तरादायी अवश्य है जिसका अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य है। युवा वर्ग में परिवर्ती दृष्टि कोणों के अपने एक अनुभविक अध्ययन में बढती है। शिक्षा राजनैतिक घटनाओं दल महत्वाकांक्षाओं में वृद्वि तथा संचार सम्बद्वता को उत्तरादायी कारक स्वीकार किया है तथा शिक्षित युवाओं में शिक्षा तथा संचार संम्बद्वता उत्तरोत्तर बढ रही है। जिससें उनमें विकास के मार्ग प्रशस्त हो रहे है।[3]

सामाजिक पृष्ठ भूमि उस समुदाय की सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग होती है। जिसमें वह सामाजिक प्राणी रह रहा होता है। प्रत्येक सामाजिक प्राणी की सामाजिक प्रस्थिति एंव भूमिका के निर्धारण में इस प्रकार की पृष्ठ भूमिका का महत्वपूर्ण

योगदान रहता हैं। यही कारण है कि किसी भी सामाजिक विज्ञान के अनुसंधान में यह आवश्यक नहीं अपितु अनिवार्य होता है कि अध्ययन की जाने वाली इकाइयों के सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पक्षों को जानकर उनका गहन तथा सूक्ष्मतः आनुभाविक अध्ययन किये जाये क्योकि व्यक्ति की सामाजिक संस्कृतिक एंव राजनीतिक पृष्ठ भूमि का निर्माण कई करकों से मिलकर होता है।[4]

द्व विद्वान जे0एन0सिंह– ''सोशल मूवमेन्ट इन इण्डिया'' में बताया है कि सामाजिक आन्दोलनो को राजनीति का आधार स्वीकार किया है इस प्रंसग में छात्र आन्दोलनों को दो वर्गो में वर्गीकृत किया है। प्रथम सांस्कृतिक द्वितीय राजनैतिक प्रथम प्रतिमान उन्मेषित और द्वितीय प्रतिमान मूल्य उन्मेषित लक्ष्य प्राप्ति को स्वीकार किया है।[5] राजनीतिक जागरूकता मानव व्यवहार के विशेषण में राजनैतिक जागरूकता का आश्य प्रायः राजनीतिक सोच व राजनैतिक सामाजिक गतिविधियां के सन्दभ्र में होती है। प्रस्तुत अध्ययन में राजनीतिक के प्रमुख आयामों राजनैतिक सांस्कृतिक, राजनैतिक समाजीकरण, राजनैतिक विकास तथा राजनैतिक सहभागिता की ओर मतदान व्यवहार को अध्ययन का आधार माना गया है। क्योकि राजनीतिक संस्कृतिक विशेष कर इसके चेतनात्मक पहलू की अभिव्यक्तीकरण होती है। जिसे राजनैतिक स्तरीकरण के रूप में निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है। शक्तिशाली– शक्तिप्राप्तकर्ता– राजनीतिक स्तर– अराजनीतिक स्तर इन चार आयमों/स्तरों तथा आधारों पर राजनीतिक जागरूकता की अवधारणाा को सहज ही समक्षा जा सकता है। राजनीतिक ज्ञान प्राप्ति की प्रकिया में वैयक्तिक अनुभवों का भी विशेष महत्व है। जिन्हे वह अपने सामाजिक व्यवसायिक जीवन में प्राप्त करता है। किसी भी समाज में विभिन्न वर्ग विभिन्न रूपों में ही राजनीतिक जीवन में भाग लेते है। यह भागीदारी उसकी सोच एंव राजनैतिक जागरूकता का प्रतीक रही हे। केवल शिक्षित व उच्च वर्ग के लोग ही राजनीति के प्रति आकर्षित है। तथा राजनीति में रूचि लेने लगे है। जिससे वे राजनैतिक सन्दर्भो का अभिज्ञान प्राप्त करते है। और धीरे–धीरे विभिन्न राजनीतिक गति विधियों में सक्रिय सहभागिता करते है। समाज की जो जातियां जो अतीत काल से सामाजिक आर्थिक राजनीतिक दृष्टि से पिछडी व उपेक्षित थी और प्रत्येक क्षेत्र में उदासीनता का आचरण करती थी वे अब प्रत्याशित रूप से राजनीतिक सन्दर्भ में सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रही है। यह परिवर्तन अविश्नीय तौर पर समाज में दृष्टिगत हो रहा हे। राजनीतिक परिपेक्ष्य समाज के सवर्ण तथा अल्पसंख्यक समूहों में विशेषतः प्रतिक्रिया स्वरूप अधिक सक्रियता दिखाई देने लगी है। इनत थ्यों से सहज यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रामीण समाज मे राजनीतिक क्षमता तथा राजनीतिक जागरूकता में अमूल चूल परिवर्तन हुआ है।[6] राजनैतिक वातावरण की व्यक्तिगत सोच तथा राजनैतिक जागरूकता पर प्रत्यक्ष गहरा तथा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे उनकी राजनैतिक चेतना में वृद्वि होती है। राजनैतिक जागरूकता पर राजनैतिक वातावरण का प्रत्यक्ष सकारात्मक तथा गहरा प्रभाव पड़ता है। क्योंकि ऐसे व्यक्ति का सामाजीकरण राजनीतिक वातावरण मे होता है जिसमें संचार साधनों की उपलब्धता होती है। जिससे राजनीतिक जागरूकता बढ़ती है।[7]

राजनीतिक सहभागिता –सहभागिता का शब्दिक अर्थ है कि किन्हीं कार्यक्रमों में साथ–साथ भाग लेने से लगाया जाता हे। यह भागीदारी वैचारिक स्तर से होकर क्रियात्मक रूप से शारीरिक गतिविधियों तक हो सकती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते विभिन्न सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदारी करता है इस भागीदारी के दौरान ही वह अपने सामाजिक व्यक्तित्व का विकास करता है। राजनीतिक सहभागिता में भागीदारी भी सामान्य राजनीतिक चर्चाओं में भागीदारी से लेकर विभिन्न धरातलों पर होने वाले चुनाव सम्बन्धी क्रिया कलापों तथा गतिविधियों में सम्मिलित होकर सहभागिता करना समाहित है। कहीं–कही उदासीनता पूर्वक राजनीतिक चर्चाओं में कुछ लोगों के द्वारा सहभागिता की जाती है। कुछ लोग सम्बद्व राजनीतिक दलो या नीतियों के प्रति इतनी प्रतिबद्वता या लगाव रखते है कि विरोधी विचार रखने वाले व्यक्तियों से भी झगडने को तैयार हो जाते है। तो कुछ लोग विभिन्न घटनाओं या विशेषतः चुनाव अवसरो पर टिकट वितरण मतदान जीत हार के सम्बन्ध में पूर्व आंकलन करने लगते है। ऐसी स्थितियां नागरिकों की सक्रिय वैचारिक सहभागिता की और संकेत करती है। कुछ लोग विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए कार्यकर्ता के रूप में दल के सदस्य बनाने प्रचार आदि में कार्य करते है। तो कुछ मतदान तथा मतगणना के समय विभिन्न राजनीतिक दलों के अभिकर्ता बनते है यहां तक कि विजयी प्रत्याक्षी के जुलूसों में भी सम्मलित होकर सहभागिता करते है। राजनीकि क्षमतावान लोग राजनीतिक प्रभाव का प्रयोग करके अपने समुदाय व गांव में विकास के लिए विकास योजानायें तक स्वीकृत करा लेते हे। ऐसे लोगो को राजनीतिक सन्दर्भो में सक्रिय तथा जागरूक कार्यकर्ता कहा जाता है राजनीतिक रूचिक के कारण सहभागिता करते करते वढती एंव अनुभव के साथ व्यक्तियों की सहभागिता में वृद्वि हो जाती है। वे स्वंय के लिए राजनीतिक पद पाने की लालसा में पूर्ण कालिक राजनीतिक नेता के रूप में स्थान प्राप्त कर लेते है।[8]

जागरूकता समाज के प्रत्येक वर्ग में बढ रही है। शैक्षिक दृष्टि से उच्च स्तर पर स्थित लोगों में यह जागरूकता लोगों में और भी अधिक विकसित है। राजनीतिक सामाजिक जागरूकता/चेतना जाग्रत करने में नवीन पंचायती राज ने अहम भूमिका निभाई है। नवीन पंचायती राज ने महिलाओं को 33प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था दी है। समस्त जातियों को एक ही साथ बैठकर न्याय करने व विकास समंबन्धी निर्णय स्वंय लेने का अधिकार प्रदान किया है। जिससे उनके मध्य छुआछूत तथा ऊॅच नीच की भावनाओं का अन्त हुआ है। राजनीतिक जागरूकता पर राजनैतिक वातावरण समाजीकरण राजनीतिक वातावरण में होता है। जिसमें साधनों की उपलब्धता होती है। जिससे राजनीति गतिविधियों का ज्ञान होता है जिसके परिणाम स्वरूप राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक सहभागित बढ़ती है। राजनीति से सम्बन्धित विषयों में नागरिकों की सहभागिता की सीमा राजनैतक क्षेत्र में उनकी भूमिका तथा राजनीतिक पद्वति के प्रति वफादारी का स्तर ये सभी तत्व देश के अर्न्तगत मतदान करना चुनाव में सक्रिय भाग लेना चुनावी प्रचार करना राजनैतिक दलों द्वारा आयोजित बन्द/हडताल व आन्दोलनों में सक्रिय भाग लेना आदि आते है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक सहभागिता के अन्तर्गत कुछ और बाते भी सम्मलित होती है। राजनीति के विषयों में ज्ञान प्राप्त करना जैसे राजनीतिक सम्बन्धी विषयों में चर्चा करना राजनीति से सम्बन्धित समाओं में उपस्थित होना राजनीति समितियों को आर्थिक रूप से सहयोग देना राजनीतिक प्रतिनिधियों से सम्पर्क स्थापित करना आदि कारक राजनीतिक सहभागिता के अधिक सक्रिय स्वरूपों के अर्न्तगत आते ही किसी राजनैतिक दल का औपचारिक सदस्य बन जाना मतदाता रजिस्टर में नाम दर्ज हो जाना तथा प्रचार करना राजनीति से सम्बन्धित भाषण लिखना एंव भाषण देना भी राजनीतिक सहभागिता के ही स्वरूप है इस प्रकार राजनीतिक सहभागिता का जटिल कार्यकलाप होता हे। जो अनके परिवर्तनशील तत्वों से प्रभावित होता है।[9] राजनीतिक सहभागिता का अर्थ है। केवल मात्र कुछ राजनैतिक अधिकारों जैसे मताधिकार का प्रयोग किया जाना ही नही वरन इसका तात्पर्य जन सामान्य का विभिन्न ऐसी राजनीतिक क्रियाओं में संलग्न होता है। जिनका प्रभाव राजनीतिक प्रक्रियाओं पर पड़ता है तथा जो सरकार के निर्णय

लिये जाने की प्रक्रिया तथा सार्वजनिक नीति–निर्माण की प्रक्रिया सम्बन्धित है।[10] इन प्रक्रियाओं का विश्लेषण करके इन्हे चार भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1. निर्वाचन में भागीदारी करनाः अर्थात मतदान क्रिया मे भाग लेना व मतदान करना।
2. अपने हितों से सम्बन्धित समूहः अर्थात हित समूहो को सर्मवन प्रदान करना व उनकी सदस्यता ग्रहण करके उन्हे सुदृढ़ता प्रदान करना।
3. राजनीतिज्ञो के साथ व्यक्तिगत रूप से मिलकरः उनके साथ प्रत्यक्ष रूप से विचार विनिमय करना तथा अपने विचारो से उन्हे अवगत कराना अर्थात राजनीतिक सम्प्रेषण।
4. राजनीतिक दलों की गतिविधियो में सक्रिय रूप से भाग लेना तथा इस प्रकार दलों की ओर से चुने हुए प्रतिनिधियों पर नैतिक रूप से अपना दबाब स्थापित करने की क्षमता को अर्जित करना।

सारांस

प्रत्येक राष्ट्र की राजनीति वहां की सामाजिक परिस्तिथयां राजनीति से प्रभावित होती है। इन दोनेा की क्रिया प्रतिक्रिया से उस देश की राजनैतिक संस्कृति का निर्माण होता है। भारत जैसे विकासशील भारत प्रजातान्त्रिक राष्ट्र में नागरिकों की राजनैतिक जागरूकता का प्रत्यक्ष प्रभाव वहां की राजनैतिक घटनाओं पर पड़ता है। व्यक्तित्व व्यवस्था जहां सांस्कृतिक एंव सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप विकसित होती हे। उसी प्रकार राजनीतिक जागरूकता भी राजनीतिक सामाजिक संस्थाओं का योगदान रहता हे। राजनीतिक जागरूकता राजनीति व्यवस्था के चरित्र निर्धारण में अहम भूमिका निभाती है। राजनैतिक जागरूकता में परिस्थिति अथवा दशा को रेखांकित करते है जो व्यक्तियों की राजनैतिक दशा व्यक्त करता है। राजनीति जागरूकता के आधार पर ही वहां के नागरिक यह अनुभव करते है कि वे देश निर्माण प्रक्रिया मे सक्रिय रूप से भागीदार बनकर देश का विकास एंव उन्नति कर सकें।

सन्दर्भ सूची

1. इण्डिया 2005 पब्लिकेशन डिवीजन मिनिस्ट्री ऑफ इन्फोरमेशन एण्ड ब्रोड कास्टिंग पृ0–9।
2. मुकर्जी रावीन्द्र नाथः– भारतीय सामाजिक संस्थाऐं विवके प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली, 1960 पृ0–127।
3. राठौर जे0एस0ः– अनूसूचित जातीय महाविद्यालय छात्र छात्राओं के बदलते दृष्टिकोण, सुमन प्रकाशन, मण्डोली रोड शाहदरा, दिल्ली 1996 पृ0–30।
4. पाठक डी0एल0ः– पोलिटिकल विहेवियर इन गुजरात विद स्पेशल रिफरेनस द फार्थ जनरल इलेक्शन, अलाइड पब्लिसर्श, न्यूदिल्ली, 1992 पृ0–23।
5. राठौर जे0एस0ः– अनूसूचित जातीय महाविद्यालय छात्र छात्राओं के बदलते दृष्टिकोण, सुमन प्रकाशन, मण्डोली रोड शाहदरा, दिल्ली 1996 पृ0–75।
6. प्रो0 रमाकान्तः– नागरिक अधिकार जातियों के प्रसंग में आरक्षण प्रतिक्रियायें युवराज प्रकाशन रोहतक हरियाणा, 1998 पृ0 224–226।
7. सिंह जे0एन0ः– सोशल मूवमेंन्ट इन इण्डिया बी0एच0यू0 वाराणसी ए0एन0के0 1986 पृ0–198।
8. महाजन डी0बी0ः– पोलिटिकल इफकसी इन अरवन इण्डिया एक सोशोलिजिकल ऐक्सपोलोरेशन द क्लासिकल पब्लिसर्श कोरपोरेशन न्यू दिल्ली, 1989 पृ0–78।
9. महाजन डी0बी0ः– पोलिटिकल इफकसी इन अरवन इण्डिया एक सोशोलिजिकल ऐक्सपोलोरेशन द क्लासिकल पब्लिसर्श कोरपोरेशन न्यू दिल्ली, 1989 पृ0–86।
10. प्रो0 श्याम लालः– कास्ट एण्ड पोलिटिकल मोविलाइजेशन, हिन्द प्रकाशन बाम्बे, 1991 पृ0–30।